REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 9 | ISSUE - 8 | MAY - 2020

जनपद प्रतापगढ़ में जल संसाधनों का भौगोलिक विश्लेषण

मान सिंह पटेल[1]&डॉ. डी. पी. सिंह[2]
[2]प्रोफेसर, भूगोल विभाग, गवर्नमेंट कालेज, राघोगढ़, म.प्र.
[1]नेट जे.आर.एफ. (भूगोल).

प्रस्तावना:

जल वास्तवमें एक अमूल्य संसाधनहै, जिसकेबिना जीवन औरवातावरण की कईक्रियायेंसम्भवही नही है।मानवसभ्यता का विकास एवंपतन जल की उपलब्धता एवंन्यूनतापरनिर्भरकरताहै।पेयजलआपूर्तिवनस्पति के जन्म एवंविकास, मृदानिर्माण, जलवायुपरिवर्तन, खनिजविदोहन, औद्योगिकविकास, परिवहनव्यवस्था, ऊर्जाप्राप्ति, भोज्य पदार्थ, मनोरंजनपर्यटन, कृषिउत्पादन एवंसिंचाई, स्वच्छता, बहिवर्हि, मत्स्य व्यवसाय आदिमें जल संसाधनों की विशिष्टभूमिकारहीहै।पृथ्वीपर जल की कुलउपलब्ध मात्रा अथवाभण्डारको जल मण्डलकहतेहै।पृथ्वी के इस जलमण्डल का 97.5प्रतिशतभागसमुद्रोंमें खारे जल के रूपमेंहैऔरकेवल 2.5 प्रतिशतहीमीठापानीहै, उसकाभीदो–तिहाईहिस्साहिमनदऔर ध्रुवीय क्षेत्रोंमेंहिमचादरोंऔरहिमटोपियों के रूपमेंजमाहै।शेषपिघलाहुआमीठापानीमुख्यतः जल के रूपमेंपायाजाताहै, जिसकाकेवल एक छोटासाभागभूमिके ऊपर धरातलीय जल के रूपमें या हवामेंवायुमण्डलीय जल के रूपमेंहै।

भारतमें जल संसाधन की उपलब्धता क्षेत्रीय स्तरपर जीवनशैलीऔरसंस्कृति के साथजुड़ीहुईहै।साथहीइसकेवितरणमेंपर्याप्तअसमानताभीमौजूदहै। एक अध्ययन के अनुसारभारतमें 71 प्रतिशतजलसंसाधन की मात्रा देश के 36 प्रतिशत क्षेत्रफलमेंसिमटीहैऔरबाकी 65 प्रतिशत क्षेत्रफल के पासदेश के 29 प्रतिशत जल संसाधनहीउपलब्ध है।वर्ष 2008मेंकिए गए एक अध्ययन के मुताबिकदेशमेंकुल जल उपलब्धता 654 बिलियनक्यूबिकमीटरथीऔरतत्कालीनकुलमॉग 634 बिलयनक्यूबिकमीटर।केन्द्रीय जल साधनों से भूमिगत जल का दोहनपीने के 125 लाख हैण्डपम्पों एवंअन्य साधनों से भूमिगत जल का दोहनपीने के पानी के रूपमेंतथासिंचाई एवंऔद्योगिककार्यो से होरहाहै।अकेलेदेश के ग्रामीणइलाकोंमेंसिंचाईहेतु 50 प्रतिशततथापेयजल के लिए 80 प्रतिशत जल पम्पिंगसैट्स एवंहैण्डपम्पों के माध्यम से निकालाजारहाहै। इस अमूल्य प्राकृतिकसम्पदा के अवैज्ञानिक एवंअन्धाधुन्ध दोहन से देश के 215 जनपदोंमेंपानी का स्तरलगातार घटताजारहाहै।इनमें से करीब 75 जनपदोंमेंभूमिगत जल स्तर 5 मीटर से भीनीचेगिरचुकाहैतथा यह गिरावटलगभग 20 सेन्टीमीटरप्रतिवर्ष की दरसे निरन्तरजारीहै।वर्तमान समय मेंजनसंख्या वृद्धि, तीव्रतरऔद्योगीकरण, सिंचितभूमि के विस्तार के कारण जल संसाधनों के शोषण का क्षेत्र भीतीव्रगति से बढ़ा है।

अध्ययन क्षेत्र:

जनपदप्रतापगढ़ गांगेय मैदानमेंस्थितहैजिसकाअंक्षाशीय विस्तार 25^0 34'उत्तरी अक्षांश से 26^0 11'उत्तरीअंक्षाश एवंदेशान्तरीय विस्तार $80^0$19' से 82^0 27'पूर्वीदेशान्तर के मध्य स्थितहै। अध्ययन क्षेत्र का कुलभौगोलिक क्षेत्रफल 3717 वर्गकिलोमीटरहैंजोउत्तर–प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 1.54 प्रतिशतहै।जनपदप्रतापगढ़ के उत्तरमेंसुल्तानपुरजनपदतथादक्षिणमेंजनपदइलाहाबादस्थितहै।जबकिपूर बमेंजनपदजौनपुरतथापश्चिममेंफतेहपुरजनपद की सीमायेंस्पर्शकरतीहै।कुलमिलाकरजनपदप्रतापगढ़ की भौगोलिकस्थितिसन्तोषप्रदहै।

प्रशासनिकदृष्टिकोण से जनपदप्रतापगढ़ में 01 जनपदमुख्यालय, 05 तहसीलें एवं 17 विकासखण्ड, 171 न्याय पंचायत एवं 1241 ग्रामपंचायतहै।कुलराजस्वग्रामों की संख्या 2219 हैजिसमें 2183 ग्रामआबाद एवं 37 गैर–आबादग्रामसम्मिलितहै।स्थानीय प्रशासन एवंनिकायों की दृष्टि से 01नगरपालिकापरिषद (प्रतापगढ़) एवं 07 नगरपंचायतसम्मिलितहै।राजनैतिकदृष्टि से 01 लोकसभा क्षेत्र (प्रतापगढ़) एवं 07 विधानसभासीटेंहै। अध्ययन क्षेत्र की कुलजनसंख्या 32.09 लाख व्यक्तिहैजिसमें 16.06 लाख पुरूष एवं 16.03 लाख स्त्रियां सम्मिलितहै।कुलजनसंख्या में 30.33लाखव्यक्तिग्रामीण क्षेत्र मे एवं 1.75 लाख व्यक्तिनगरीय क्षेत्र निवासकरतेहै।

ऐतिहासिकदृष्टिकोण से कन्नौजसाम्राज्य के पतन के बाद इस क्षेत्र परभरराजाओं का नियन्त्रण स्थापितहोगयाजिन्हेंबादमेंराजपूतों ने धीरे–धीरेभगादियाफिरभीमानिकपुरऔरनिकटवर्ती क्षेत्रोंमेंइनकानियन्त्रण बनारहा।वहसम्पूर्ण क्षेत्र जिसेआजप्रतापगढ़ जनपदकहतेहै।

प्राकृतिकस्वरूपः

प्रतापगढ़ जनपदगंगा के मैदान का एक अभिन्न अंग हैजिसकानिर्माण यहॉपरवहनेवालीनदियों के निक्षेपण के फलस्वरूपहुआहै।सम्पूर्ण क्षेत्र की औसतऊॅचाई 175 मीटरहै।वहॉपरगंगा, सई, गोमती, नैया एवंचमरौड़ मुख्य नदियांहै।इसकेअतिरिक्त यहॉपरतालाब एवंझीलों की संख्या बहुतायतमेंहै। यहॉ की जलवायुमानसूनीहै।औसततापमान 26.50डिग्री सेन्टीग्रेट, वर्षा 95 सेन्टीमीटर, सापेक्षिकआर्द्रता 70 प्रतिशत एवंवायु की गति 6.00 किलोमीटरहै। अध्ययन क्षेत्र मेंमिट्टियांउर्वरता धारणकिए है। यहॉपरदोमट, बलुई, चिकनी, मटियारमिट्टी की बहुलताहै। खनिजपदार्थो की दृष्टि से यहॉपरनदियोंमेंबालू का खननकार्यकियाजाताहै।सम्पूर्ण क्षेत्र मेंमानसूनीवनस्पतिपाईजातीहै।वहॉपरवनों के अन्तर्गत 569 हेक्टेयरभूमिसम्मिलितहै।

आर्थिकस्वरूपः

प्रतापगढ़ जनपद एक कृषिप्रधान क्षेत्र हैजो यहॉपरनिवासकरनेवालीजनसंख्या का मुख्य व्यवसाय है।कृषि के अलावापशुपालन यहॉ का दूसराउद्यमहै।कुलकार्यशीलजनसंख्या का 60 प्रतिशतभागकृषि एवंपशुपालनकार्यमेंसंलग्नहै।सकलप्रतिवेदितक्षेत्रफल का 57.12 प्रतिशतभागकृषि के अन्तर्गतहै। एक से अधिकबारबोयागया क्षेत्रफल 67.27 प्रतिशतहै।सकलबोयागया क्षेत्रफल 320078 हेक्टेयरहैजिसमें 50.46 प्रतिशतरबी 46.97 प्रतिशत खरीफ एवं 2.57 प्रतिशतजायद की फसल के अन्तर्गतहैंकुलकार्यभूमि का 88.67 प्रतिशतसिंचितहै।प्रतापगढ़ जनपदमेंकुलपशुधन की संख्या 10.72 लाख हैजिसमें 3.82 लाख गौवंशीय, 3.59 लाख महिशवंशीय एवं 3.29 लाख अजातवंशीय पशुधनसम्मिलितहै।इसकेअलावाकुक्कुटपालन की संख्या 2.10 लाख है।ष

प्रतापगढ़ जनपदमेंसड़कमार्गो की लम्बाई 7050 किलोमीटरहै।इसकेअलावारेलमार्ग की लम्बाई 115 किलोमीटरहै। अध्ययन क्षेत्र मेंसंचारसाधनोंमें 365 डाकघर, 685 पी0सी0ओ0, 55125 टेलीफोनकनेक्शन एवंमोबाइलकनेक्शनमुख्य है।कृषिप्रधान क्षेत्र होने के परिणामस्वरूप यहॉपरकृषिआधारितउद्योगों की स्थापनाहुईहै। यहॉपरलगभग 450 औद्योगिकइकाईयांकार्यरतहै।

अध्ययन के उद्देश्यः

जल एक महत्वपूर्णसंसाधनहैजिसकीउपयोगिता घरेलूपेयजल से लेकरआर्थिकक्रियाओं के संचालनमें देखीजातीहै।इसकीउपलब्धताऔरउपयोगमेंअन्तरहोने के कारणसामाजिक, आर्थिकऔरपर्यावरणीय जैसीगम्भीरसमस्यायेंउत्पन्नहोने की आशंकाबनीरहतीहै।इसीलिए जल संसाधनों की उपलब्धताऔरउपयोगिताकोदृष्टिगतकियाहै।प्रस्तुतशोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखितहैः–

1. अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिकपृष्ठभूमि की व्याख्या करनाक्योंकिभौतिक एवंसामाजिकदशायेंकिसी–किसी क्षेत्र में जल संसाधनउपलब्धताऔरउपयोगमें घनिष्टसम्बन्धों की परिचायकहोतीहै।
2. अध्ययन क्षेत्र में जल संसाधनों के विभिन्नस्रोतों, जल संसाधनों की मात्रा, उनके वितरण की स्पष्टव्याख्या की गईहै।
3. अध्ययन क्षेत्र मेंउपलब्ध जल संसाधनों की विभिन्नसामाजिक–आर्थिक क्षेत्रोंमेंउपयोगिता का मूल्यांकनकियागयाहै।

4. अध्ययन क्षेत्र मेंउपलब्ध जल संसाधनों से जुड़ीविभिन्नप्रकार की समस्याओं का विश्लेषणकियागयाहै।
5. अन्तमें अध्ययन क्षेत्र में बढ़ती हुईजनसंख्या और जल संसाधनों की बढ़ती मॉगको देखतेहुए जल संसाधनों के संरक्षण एवंविवेकपूर्णप्रबन्धनहेतुसुझाव प्रस्तुतकरना अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हैताकिपारिस्थितिकसन्तुलन के साथ–साथमानव जीवन कोगुणवत्ताबनीरहेजोभूगोलविषय के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।

शोध परिकल्पनाः

जनपदप्रतापगढ़ एक समतल एवंमैदानीभू–भागहैजहॉपरपर्याप्तमात्रा में जल संसाधनों की उपलब्धताहैं। जल यहॉपरनहरें, नदियां, झीलें, तालाब एवंकृत्रिम साधनों के माध्यम से भूमिगत जल के रूपमेंविद्यमानहै। जल का अधिकांशभागकृषिकार्यहेतुसिंचाईकार्योमेंप्रयुक्तकियाजाताहै।वर्तमानमेंतीव्रगति से बढ़ती हुईजनसंख्या के फलस्वरूपऔद्योगीकरण, नगरीकरण के कारण जल की मॉगदिनोंदिन बढ़ती जारहीहैकिन्तुवर्षा की अनियमितता एवंअनिश्चितताथा जल के अत्यधिकदोहन के फलस्वरूप जल संकट की समस्यादिनोंदिनगम्भीरहोतीजारहीहै। अध्ययन क्षेत्र में जल संसाधनों से सम्बन्धितकुछप्रमुख परिकल्पनायें इस प्रकारहै–

1. अध्ययन क्षेत्र मेंलगभग एक दर्जननदियांप्रवाहितहोतीहैजिसमें से कुछसततवाहिनीहै। इनके जल का प्रयोगकृषिकार्यमेंप्रयुक्तहोताहै, परन्तु यह नगरीय क्षेत्रों से निकलनेवालेगन्दे जल व औद्योगिकप्रदूषित जल के मिलने से अत्यधिकप्रदूषितहोगईहै।इनका जल कृषि क्षेत्र, पशुपालन, पेयजलआपूर्ति की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र मेंपूर्णतः अनुपयोगीहोगयाहै।
2. जनपदमेंनहरों की लम्बाई 1769 किलोमीटरहैकिन्तुइनकावितरणअसमानहै।इसकेसाथहीनहरोंमेंजलापूर्ति, क्षमता कम होरहीहै या फिरउनकोपर्याप्त जल आपूर्तिनहींहोपारहीहै, परिणामतः नहरेंअनार्थिक व अलाभकारीहोरहीहै।
3. अध्ययन क्षेत्र मेंपर्याप्त जल उपलब्धता के परिणामस्वरूपकृषि क्षेत्र मेंपर्याप्तबदलावदिखलाईपड़ताहै।कृषि के अन्तर्गतसिंचाई का कार्य 85 प्रतिशत से अधिकभागपरकियाजारहाहै।
4. अध्ययन क्षेत्र मेंवार्षिकवर्षा का औसत 90–95 सेन्टीमीटरहै, वर्षाअनियमित व अनिश्चितहै, ग्रीष्मकालीनअधिकतमतापमान 30^0–40^0 सेन्टीग्रेटतकहोजानातथागर्मलू के थपेड़ों का प्रभाव क्षेत्र में जल का संकट बढ़ रहाहै।
5. कृषि व पशुपालन क्षेत्र, पर्यटनव्यवसाय तथापेयजलआपूर्ति व घरेलूमांगमेंतेजी से वृद्धि के कारण क्षेत्रीय जल संसाधनोंपरअनवरतदबाब बढ़ रहाहै।

जल संसाधनों का क्षेत्रीय वितरणः

जनपदप्रतापगढ़ के भूपृष्ठीय एवंअवमृदा जल संसाधनों का विश्लेषणकरने से पूर्ववर्षा की मात्रा, वर्षा के मौसमतथाप्रकृति का अध्ययन करनाअधिकउत्तमहोगाक्योंकिवर्षाही एक मात्र साधन या माध्यम हैंजोदोनोंहीप्रकार के जल को न केवलप्रभावितकरतीहैअपितुउसकोनियंत्रित करतीहैं।वाार्षिकवर्षा 90 से 95 सेन्टीमीटरहैकिन्तु क्षेत्रीय स्तरपरवर्षामेंअसमानतामिलतीहै।कुलनहरों की लम्बाई 1767 किलोमीटरहै। यहॉपरप्रवाहितहोनेवालीनदियोंमेंऔसत रूप से 6 से 8 माह जल की प्राप्तिबनीरहतीहै।जनपदहरदोईमें जल युक्ततालाबों की संख्या 55 एवंझीलों की संख्या 30 है। इस प्रकार जल स्रोतों की स्थितिसन्तोशजनकहैंपरन्तुग्रीष्मकालमेंभूपृष्ठीय जल की न्यूनता देखनेकोमिलतीहै।

जनपदप्रतापगढ़ मेंअवमृदा जल स्तर की गहराईहेतुभूगर्भ जल संरक्षणविभाग द्वाराभूगर्भ जल पर्यवेक्षणकेन्द्रों की स्थापना की गईहै, जोवर्षभरवर्षा की मात्रा, भूजलस्तर की गइराई, अवमृदा जल की रिचार्जगति, जल की उपलब्धता व दोहन की तीव्रता की गणनाकरतेहै। अध्ययन क्षेत्र मेंअवमृदा जल सतर की औसतगहराई 7.50 मीटरहै।मानसूनपूर्वअवमृदा जल स्तर की गहराई 7.75 मीटरहैंवहींपरमानसूनउपरान्त यह गहराई 7.25 मीटरतकपहुॅचजातीहै।जैसाकितालिका–सेस्पष्टहै।

तालिकासंख्या – 1

जनपदप्रतापगढ़ का अवमृदा जल स्तर की गहराई, 2019

क्र0 सं0	विकास खण्ड	जल स्तर की गहराईमीटरमें		
		मानसूनपूर्व	मानसूनप�चात्	औसत
1–	कालाकांकर	8.20	7.72	7.95
2–	बाबागंज	7.85	7.35	7.60
3–	कुण्डा	8.00	7.25	7.62
4–	बिहार	7.80	7.10	7.40
5–	सांगीपुर	8.05	7.65	7.85
6–	लालगंज	8.20	7.75	7.97
7–	लक्ष्मणपुर	7.85	7.42	7.63
8–	संडवाचन्द्रिका	8.25	7.75	8.00
9–	प्रतापगढसदर	7.93	7.52	7.72
10–	मान्धाता	7.80	7.30	7.50
11–	मंगरौरा	8.15	7.85	8.00
12–	पट्टी	8.10	7.60	7.85
13–	आसपुरदेवसरा	7.95	7.50	7.72
14–	शिवगढ़	7.70	7.30	7.50
15–	गौरा	7.90	7.40	7.65
16–	रामपुरसंग्रामगढ	8.25	7.75	8.00
17–	बाबाबेल्खरगढ़	7.80	7.20	7.50
योगजनपद		**7.75**	**7.25**	**7.50**

स्रोतः भूगर्भ जल विभाग, जनपदप्रतापगढ़ से प्राप्तसूचनापरआधारित।

अवमृदा जल स्तरमेंवार्षिकपरिवर्तनः

वर्षा की मात्रा, वर्षा की प्रकृति एवंदिनों की संख्या, बाढ़ के फैलाव, दोहन की गतितथाअन्य भौगोलिकपरिस्थितियों का अवमृदा जल के रिचार्जहोने की गतिपरस्पश्टप्रभावपड़ताहै।इसीलिए मानसूनपूर्व एवंमानसून के पश्चात् अवमृदा जल के स्तरमेंहोनेवालावार्षिकपरिवर्तनभीपरिवर्तितहोतारहताहै।जनपदप्रतापगढ़ में 1988 से 2018 के मध्य विगत 30 वर्षोंमेंऔसतन 1.25 मीटरवार्षिक का अन्तरआतारहाहैअर्थात् 1987 मेंअवमृदा जल स्तर की गहराई 6.25 मीटरथीजो 2008 में 6.85 मीटर एवं 2018 में 7.50 मीटरतकपहुॅचगईहै।

जल संसाधनों की उपयोगिताः

जनपदप्रतापगढ़ के जल संसाधनों का क्षयकारीउपयोगअधिकदृष्टिगोचरहोताहै। घरेलूउपयोग के अन्तर्गत जल का पीने के लिए, खानाबनाने, स्नानकरने, कपड़ेसाफकरने, पशुओंकोपिलाने, नहलाने के लिए उपयोगसम्मिलितहै।जनपदप्रतापगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रोंमें 30.33 लाख व्यक्तियोंहेतुजलापूर्ति2210 ग्रामीणकुओं, 25155 इण्डिया मार्क–2 हैण्डपम्प एवं 3.10 लाख सामान्य हैण्डपम्पों के माध्यम से होतीहै।जबकिनगरीय क्षेत्र में 1.69 व्यक्तिनिवासकरतेहैजिन्हेंजलापूर्ति 45 नलकूप, 50 ओवरहैडटैंकोंजिनकी क्षमता 95 हजारकिलोमीटरहैतथा 2540 इण्डिया मार्क–2 हैण्डपम्पों के माध्यम से की जातीहै।

प्रतापगढ़ जनपदमेंसिचाई के साधनोंमेंनहरों की लम्बाई 1767 किलोमीटरहैजिनकेमाध्यम से 21680 हेक्टेयरभूमि की सिंचाई की जातीहै।राजकीय नलकूपों के द्वारा 9.67 प्रतिशतभूमिसिंचितहैजिनकी संख्या 133 है।निजीनलकूपों की संख्या 8521 हैजिनकेमाध्यम से 18328 हेक्टेयरभूमिसींचीजातीहै।डीजलचालितपम्पिंगसैट्स के द्वारा 123947 हेक्टेयर क्षेत्रफलसींचाजाताहैंजिनकी संख्या 93704 है।जबकिइसकेअतिरिक्तअन्य प्रकार के साधनों द्वारा 1470 हेक्टेयरभूमि की सिंचाईहोतीहैजिनकी संख्या 1517 है।जैसाकितालिका–मेंदर्शायागयाहै।

तालिकासंख्या – 02

प्रतापगढ़ जनपदमेंसिंचाई के साधन एवंसिंचित क्षेत्रफल, 2017–2018

क्र. सं.	सिंचाई के साधन	संख्या	क्षेत्रफल	प्रति�ात
1.	नहर	1767	21680	11.84
2.	राजकीय नलकूप	133	37709	9.67
3.	निजीनलकूप	8521	18328	10.00
4.	डीलजचालितपम्पिंगसैट्स	93704	123947	67.69
5.	अन्य प्रकार के साधन	1517	1470	0.80

स्रोतःजिलासांख्यिकीय पत्रिका, अर्थ एवं संख्या प्रभागजनपदप्रतापगढ़, 2019।

जल संसाधनसम्बन्धीसमस्यायें:

जनपदप्रतापगढ़ में जलसंसाधनों से सम्बन्धितविभिन्नसमस्यायेंसामनेआतीहै।जनसंख्या की तीव्रवृद्धि तथातकनीकीक्रान्ति के परिणामस्वरूपउत्पादकशक्तियों के तीव्रविकासप्रक्रियामेंमानवकोविभिन्नसमस्याओं का सामनाकरनापड़ रहाहैजिसमेंजनसंख्या औरअर्थव्यवस्था की बढ़ती हुई जल की मॉगभी एक प्रमुख समस्याहैः–

1. **पेयजलआपूर्तिसम्बन्धीसमस्यायें**ःजनपदप्रतापगढ़ मेंवर्षा की औसतमात्रा 100 सेन्टीमीटरतकबनेरहना, ग्रीष्मकालमेंऊँचेतापमान, भूपृष्ठीय जल स्रोतों का सिकुड़तेजानातथाअवमृदा जल स्तर का तेजी से गहरेहोतेजानाआदि के साथ–साथप्रवाहितहोनेवालीनदियों का सिकुड़तेजाना, आदिअनेककारणहैजिससेग्रामीण व नगरीय क्षेत्रोंमें घरेलू जल आपूर्ति, विशेष्तः पेयजलआपूर्ति की समस्यागम्भीरहोचलीहै।
2. **भूमिगत जल स्तरमेंतेजी से गिरावट**ःजनपदप्रतापगढ़ मेंभूमिगत जल स्तरमेंतीव्रगति से गिरावट एक गम्भीरसमस्याहै।वर्षा की अनियमितता व अनिश्चितता, तालाबों, पोखर व झीलों की संख्या मेंअनवरतकमीहोतेजाना, नहरोंमें जल प्रवाह की कमी, कृषि क्षेत्र में बढ़ती जल की मांग के कारणअवमृदा जल का अधिकदोहनआदिअनेक ऐसेकारणहैजिनकेपरिणामस्वरूपअवमृदा जल का स्तरप्रतिवर्ष 35–50 सेन्टीमीटरनीचे की ओर खिसकरहाहैजोआगामीवर्षोमें जल संकट का बड़ाकारणअवश्य हीबननाहै।
3. **जल का असमानवितरण**ःजनपदप्रतापगढ़ मेंअवमृदा का वितरणभीसमाननहींहै। यद्यपि अवमृदा जल स्तर की औसतगहराई 7.50 मीटरहै।जहॉं एक ओरसंडवाचन्द्रिका, मंगरौरा एवंरामपुरसंग्रामगढविकासखण्डोंमें जल स्तर क गहराई 8.00 मीटरतकहै।वहींपरदूसरीओरमान्धता,शिवगढ़ एवंबिहारविकासखण्डोंमेंजल स्तर की गहराई 7.40 तकमिलतीहै। इस प्रकारअवमृदा जल के स्थानिकवितरण की असमानताभी एक बड़ीसमस्याहै।
4. **जल मेंहानिकारकतत्वों की उपस्थिति**ःवर्तमान समय में जल की उपलब्धताभलेहीपर्याप्तहो, परन्तु जल के प्राकृतिकगुणोंमेंतेजी से ह्रासहुआहैं।औद्योगीकरण, नगरीयकरण, मशीनीकरण के प्रयोगतथारासायनिकउर्वरकों, खरपतवार व कीटनाशकरसायनों, डिटर्जेन्टपाउडर का प्रयोग, पालीथीन का प्रचलनहोने से प्राकृतिक जल, चाहेवहभूपृष्ठीय हो या अवमृदा जल होउसमेंजहरीलेपदार्थो का समावेशहोतागयाहै।
5. **जल–प्रबन्धनसम्बन्धीसमस्या**ःजनपदप्रतापगढ़ में जल संसाधनों के वैज्ञानिकप्रबन्धनहेतुसमुचितव्यवस्था का विकासनहींहुआहै। अध्ययन क्षेत्र में जल संसाधनों की उपलब्धताउनकीमॉग, डिस्चार्जतथारिचार्जमात्रा से सम्बन्धितपर्याप्तआंकडों का उपलब्ध न होना एक मुख्य समस्याहै।

जल संसाधनसंरक्षणसम्बन्धीसुझावः

जल एक महत्वपूर्णसंसाधनहै, अतः इसकाउपयोगनियंत्रित व सुव्यवस्थित रूप से करने की महतीआवश्यकताहै। इस लक्ष्य की प्राप्ति एवंउद्देष्य की सफलताहेतुजनपदप्रतापगढ़ में जल संसाधनों के संरक्षणहेतुमुख्य सुझावों का विवरण इस प्रकारहैः

1. जनपदप्रतापगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रोंमेंविशेषकरभूमिगत जल का प्रयोगसिंचाईकार्योमेंअधिककियाजाताहै।सिंचाईहेतु ऐसीतकनीकी का विकासकियाजाये, जिससेसिंचाईकार्यमें जल की कम मात्रा का प्रयोगकियाजासके।
2. जनपदप्रतापगढ़ मेंसिंचाईकार्यहेतु जल कोउसकेप्राप्तिस्रोत से खेतोंतकपहुॅचाने के लियेरबर या प्लास्टिक के पाइपों का उपयोगकियाजानाचाहिये।
3. सिंचाईकार्यमें कम मात्रा में जल का उपयोगकरने के लिये 'ड्रिपसिंचाई' तकनीकी का प्रयोगकियाजानाचाहिए। यह कार्यदोस्तरपरकियाजासकताहै–आर्थिक रूप से सम्पन्न कृषकोंकोचाहिए किवेअपने खेतोंमेंतीन से चारफिटगहराईपरपाइपलाइनबिछाकरउनसेड्रिपसिंचाईतकनीकी से सिंचाईकरें। अपेक्षाकृत कम सम्पन्न कृषकअस्थायीपोर्टेबिलपाइपों से ये कार्यकरसकतेहैं। इस तकनीकी से सिंचाईकार्योमें जल के व्यय की मात्रा मेंलगभग 50 प्रतिशत की कमीहोसकेगी।
4. सिंचाईकार्यमें खेतोंमेंअधिक जल के भराव से बचनाचाहिये।इससेफसलेंभीनष्टहोतीहैतथा जल का भीदुरूपयोगहोताहै।
5. असमतल खेतोंकोसमतलकियाजानाचाहिये, इससेसम्पूर्ण खेतोंमेंसमानमात्रा मेंपानी का भरावहोसकेगाऔरसिंचाई की आवृत्ति कम होनेमेंसहायतामिलेगी।
6. नलकूपों द्वारासिंचित क्षेत्रोंमें कम समयान्तरालपरबिजलीचलेजाने से बार–बारप्रवाहमार्गमें जल प्रवाहकरनापड़ताहै।अतः नलकूपोंको कम से कम 8 से 10 घण्टेअवधिगति से विद्युतआपूर्ति की जायेजिससे कृषक की उत्पादनलागत कम होगीतथा जल का दुरूपयोगरोकाजायेगा।
7. सिंचाईकार्यहेतुनलकूपोंमेंविद्युत के स्थानपरवैकल्पिकऊर्जाविशेषकरसौरऊर्जा के प्रयोगकोविकसितकियाजानाचाहिए।इससेअसमय होनेवालीविद्युतकटौती के परिणामस्वरूपउत्पन्नसमस्याओं से छुटकारामिलेगाऔरसिंचाईकार्यमें जल का अपव्यय कम होसकेगा।
8. जनपदप्रतापगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रोंकोदिनमेंविद्युतआपूर्ति की जानीचाहिए, जिससेसिंचाईकार्यमेंरात्रि मेंअन्धेरे के कारणहोनेवाले जल के अपव्यय कोरोकाजासकताहै।
9. जनपदप्रतापगढ़ मेंसिंचाईकार्यहेतुनलकूपों की संख्या मेंवृद्धि करने के लियेपंचायतीनलकूपों की स्थापनाप्रारम्भ की जानीचाहिए, इससेआर्थिकसाधनों की कमी के कारणनिजीनलकूपलगवानेमेंअसमर्थ कृषकभीनलकूपों द्वारासिंचाई से होनेवालेलाभोंकोप्राप्तकरसकेंगें।
10. ग्रामीणतथानगरीय क्षेत्रोंमेंइण्डिया मार्क–2 टाइपहैण्डपम्पों की संख्या मेंवृद्धि की जानीचाहिये।इससे अपेक्षाकृतअधिकस्वच्छपेयजल की आपूर्तिहोसकेगी।

सन्दर्भ

1	कौशिक, एस0डी0 एवंगौतमअलका	:	संसाधनभूगोल, रस्तोगीपब्लिकेशन्समेरठ, 2003
2	एम0 रजा एवं सिंह अमर	:	संसाधन एवंसंरक्षणभूगोल पृष्ठ–03
3	गौतमअलका	:	संसाधन एवंपर्यावरणशारदापुस्तकभवनइलाहाबाद 2010
4	मामोरियाचतुर्भुज एवंसिसौदिया एम0एस0	:	आर्थिकभूगोल, एस0बी0पी0डी0 हाउसआगरा 2012–2013 पृष्ठ–15
5	सिडनेजुपीटर	:	इकोनोमिकग्रोथ एण्ड सिपेरीटीज ए वर्डरिव्यू पृष्ठ–20
6	पी0एच0 क्यूनेन	:	रियलम्सआफवाटर पृष्ठ–19
7	सिंह यू0बी0 एवंप्रकाशवेद	:	संसाधनभूगोल, जय श्रीप्रकाशननईमण्डीमुजफ्फरनगरप्रथमसंस्करण 1991–92 पृष्ठ–2–3
8	अग्रवालउमेशचन्द्र	:	जल प्रबन्धनः चुनौतियांऔर समाधान योजनाजून 2006 मासिक पत्रिका पृष्ठ–16
9	यादवराहुल	:	भारतमेंसाठफीसदीबीमारियों का कारणअशुद्ध पानी, कुरूक्षेत्र जनवरी 2013 मासिक पत्रिका पृष्ठ–25
10	अरोड़ा एस0के0 एवं ध्यानीसंजय	:	इक्कीसवींसदी की चुनौतीः स्वच्छपेयजल योजनाजून 2006 मासिक पत्रिका पृष्ठ–21